पयामे शाकिर

अमित कौल 'शाकिर'

With due regards
Prof. (Dr.) Dr. B. L. Kaul.
16/5/12
O. K. Kaul.

पयामे शाकिर

PAYAME SHAKIR

लेखक :

अमित कौल "शाकिर"

मकान नं० 63, सेक्टर ए-1, लक्ष्मीपुरम
चिनौर: बनतालाब, जम्मू
(जम्मू व कश्मीर)
दूरभाष : 2596142

नाम : पयामे शाक़िर

लेखक : अमित कौल 'शाक़िर'

प्रकाशन वर्ष : सन् 2004 ई०

संख्या : 500

मूल्य : 50 रु०

छापखाना : दुर्गा प्रिन्टिंग प्रैस
पुराना जानीपुर, जम्मू

मिलने का पता : मकान नं० 63
सेक्टर ए-1, लक्ष्मीपुरम्
चिन्नौर: बनतालाब
जम्मू

प्राक्कथन

अपनी बी०एड० के पाठ्यक्रम में शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन करते हुए पढ़ा था कि किशोरावस्था का मन कवि का मन होता है। वो कल्पना की ऊँची उड़ान भरता है तो कभी अत्यन्त भावुक होता है। ऐसा ही पाया है अमित 'शाकिर' को। अपने मन के उद्‌गारों को लेखनी से कागज़ पर सहजता से ज्यों का त्यों उतारा है। अपनी गज़लों और नज़मों के जरिये। शाकिर के पिता जो स्वयं एक लेखक हैं और कलाकर भी, से बात करने पर पता चला कि अमित ने अभी अपनी उम्र के बीस साल भी पूरे नहीं किए और वो अभी इंजीनीयरिंग कॉलेज का छात्र है।

'शाकिर' की कुछ नज़में, गज़लें व कुछ अशयार पढ़ते हुए पाया कि शायर कभी अपने महबूब से मुख़ातिब हैं तो कभी आजकल के दौर में चल रहे अपने आसपास के वातावरण से। जब वो लिखते हैं

'बाद में लड़ना तुम ज़मीनों पे।
पहले इन्सान को ज़िन्दा रखना।।'

आज के दौर में जब हम भौतिकवाद के युग में जी रहे हैं, एक नवयुवक शायर की कलम से ऐसे बोल समस्त विश्व समुदाय को इन्सानियत का सन्देश दे रहे हैं।

शुभकामनाओं सहित।

मनोज बंसल
सहायक निदेशक
गीत एवं नाटक प्रभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, जम्मू केन्द्र

दो शब्द

मेरे शऊर ने खामोशियों से माँगा है,
इक ऐसा नग़मा जो हर रूह में उतर जाये।

......और पता भी नहीं चला कि कब यह खामोश, चुप-चुप रहने वाला; शर्मिला, छोटा सा लड़का; लड़कपन की गलियों को पार करते-करते शायर बन बैठा। अभी तो यह जवानी की दहलीज़ पर पाँव रख ही रहा है, मगर जाने कब से दर्द, महोब्बत, विरह और इन्सानी रिशतों की कड़वाहट के ऐहसासात को अपने अन्दर, कहीं गहरे में बो चुका है, मैंने देखा है कि "चुंकि मैं इसे करीब से देखता आ रहा हूँ" कैसे होले-होले...... ये बीज कैसे अँकुरित हुए और नन्हें-नन्हें पौधे उगे और अब तो कौंपले फूट आए हैं। फूल खिल रहें हैं और इन्हीं केसर के महकते नाज़ुक फूलों को गज़लों ओर नज़्मों की शक्ल में अपनी हथेलियों में भर-कर आपके समक्ष रख रहा है।

यह शायर "अमित" 1984 में कश्मीर में पैदा हुआ। बसन्त रूत की किसी सुबह की नरम-नरम कच्ची धूप सा खिल रहा है अभी। प्रभात की उषा अभी इसके चेहरे और मन पर अपनी लालिमा बिखेर ही रही है।

हाँ, मगर मुझे साफ-साफ दिखाई दे रहा है कि यह शायर, जिसके छोटे-छोटे पँखों ने अभी-अभी उड़ना सीखा है, जानता है कि...... अभी क्षितिज तक पहुँचने को बहुत दूर तक, बहुत देर तक परवाज़ भरनी होगी। यह जानता है कि अभी

ज़िन्दगी की हवाओं के लू के गर्म-गर्म थपेड़े सहने होंगे और वक्त की कौंदों में पककर कुन्दन बन के निखरना होगा। अपने ऐहसासात के कच्चे हीरे को तराशना होगा तभी तो इंन्द्रधनुष के रंग बिखरेंगे ओर चमकते रहेंगे।

यूँ तो अमित की रगों में एक बेहतरीन शायर, ड्रामानिगार और एक अदाकार बाप श्री जे० के० कौल "बेज़ान" का खून गर्दिश कर रहा है, जिनकी उँगली को थामे अमित 'शाकिर' आगे बड़ता जा रहा है। मगर......

"प्रभु तुम तो केवल पथ हो,
चलना तो हमको ही होगा......।
इन हिम की ठन्ड़ी चटानों पर,
गलना तो हमको ही होगा।
चलना तो हमको ही होगा।

माँ सरस्वती अपने खज़ाने से और दान दे-इसे; ऐहसासात, तस्सवुरात गज़लें, गीत और शायरी के और मजमुआत की आशा करेंगे......

यह मेरी प्रार्थना है।

क्षेमेन्द्र रैना
38, सुभाष नगर
जम्मू

अपनी बात

ज़िन्दगी वाक़ी दो लफ़्ज़ों का जोड़ है। पर है मानी-खेज़ और तवील सफ़र। इस सफ़र में कितनी ही दुशवारियों का सामना होता है। कभी खुशगुवार लम्हे और कभी तलख तजरूबे। इस सफ़र में कुछ दिलचस्प हादसे भी दरपेश आते हैं, जिनको परखने के बाद इन्सान को एक अजीब तरह का अहसास होने लगता है।

ऊपरवाले ने इन्सान को वाक़ी अशरफुल-मखलूकात बनाया है; लेकिन इसके अन्दर ऐसा दिल भी बनाया है; जिसमें जज़्बों का एक ऐसा सिलसिला है कि नाजुक रिशते जन्म लेते हैं। अपने दिल के इन्हीं जज़्बातों को कलमी ज़बान देने की एक हकीर सी कोशिश की है मैंने। क्योंकि

इन्सानी ज़िन्दगी में आह भी है और आहोज़ारी भी; शिक्वे भी हैं और शिकायतें भी; गर्ज़ ज़िन्दगी का हर पहलू परखने के काबि़ल है।

अपने आपको खुशनसीब समझता हूँ क्योंकि मैंने उस परिवार में जन्म लिया; जहाँ कलमकारी और कलाकारी का खुशगुवार और पुरफिज़ा माहोल था। अपने वालदेअन की होसलाअफ़ज़ाई की वजह से "पयामे शाकि़र" आपकी खि़दमत में रख रहा हूँ। इस शुमारे में कोई गल्ती हो तो माज़रतख़ा हूँ। आपकी दुवाओं से अगले शुमारे में दुरूस्त करने की कोशिश करूँगा और आपकी दुवाओं का मुन्तज़िर रहुँगा।

"अमित कौल शाकि़र"

शोर की खामोशी में गुमनाम सा शख्स !
लोगों की भीड़ में इक आम सा शख्स !

अपनी तो हसरतें न कर सका पूरी !
देखिये आप भी इक नाकाम सा शख्स !

खामियाँ ये न छुपा पाया अपनी !
अपने ही नाम से बद्नाम सा शख्स !

जिसका कोई भी वजूद नहीं ! 'शाकिर' !
मुझसा और मेरे हर कलाम सा शख्स !

- अमित कौल 'शाकिर'

ग़ज़ल

क्या मैं ज़िंदगी में कर गुज़रा!
वक्त गुज़रा तो किस कदर गुज़रा!

किया आगाज़ जहाँ से मैंनें!
मैं वहीं हूँ। बस सफ़र गुज़रा!

चला था किस अंदाज़े जनून से मैं!
काट राह मेरी, समन्दर गुज़रा!

देखले ये ज़ख्मी हालत मेरी!
मेरे सीने से ये, खंजर गुज़रा!

यूँ कहो गुज़र गया बस 'शाकिर'!
पर जो गुज़रा तुझपे, कहर गुज़रा!

ग़ज़ल

किससे पूछूँ क्या कारवाँ है यहाँ!
ज़िंदगी भर का फासला है यहाँ!

ठोकरे हर मोड़ पर है लिखी!
न कोई आसाँ रास्ता है यहाँ!

थक न जाँऊ कहीं मैं चल-चल के!
हर कदम पर इम्तिहाँ है यहाँ!

कौन देखें किसी की खूबी यहाँ!
देखते बस सभी खामियाँ है यहाँ!

कौन सुनता है किसी की 'शाकिर'!
सबकी कुछ अपनी दास्ताँ है यहाँ!

ज़रा ज़िंदगी का मज़ा देखिए!
जो हमें है मिली! सज़ा देखिए!
बस मोहब्बत ही की थी! दगा तो नहीं!
सारी दुनिया है हमसे खफ़ा देखिए!

जान मेरी गई!
उनका क्या खो गया!
कब्र मेरी बनी!
उनका क्या हो गया!
कैसी तक़दीर दी है खुदा देखिए!

प्यार ही तो किया था!
उनसे नफरत न की!
अपना था उनको समझा!
कोई वहशत न थी!
उसने कैसी है की ये वफ़ा देखिए!

बस मोहब्बत करूँगा!
उनसे उम्र भर!
दुनिया का कोई मुझको!
नहीं अब तो डर!
आशिकी की ये मेरी खत्ता देखिए!

ग़ज़ल

तुमने हमपै किये हैं जो इतने सितम!
सहते-सहते कहीं मर ना जाऐंगे हम!

हर तरफ छाई है कैसी आवारगी!
जाना चाहें जहाँ जाते हैं न कदम!

बैठे कब से हैं हम तेरे दीदार को!
छोड़ दे अब गिला तुझको मेरी कसम!

किसको देखा करें किसका सजदा करें!
इक तरफ है खुदा इक तरफ है सनम!

अब तो परवाह न कर इस जमाने की तू!
आजा लग जा गले छोड़ के अब शर्म!

ज़िंदगी क्यों अजनबी है मेरी!
अपनी होकर भी क्यों नहीं है मेरी!

ज़हन में कुछ सवाल उठते है।
अपने ही घर में क्यों कमी है मेरी!

बस अभी के अभी में ज़िन्दा था!
नब्ज़ लगता है अब थमी है मेरी!

दफ़न हो सके जहाँ पे 'शाकिर'!
बस इतनी सी ज़मीं है मेरी!

जाँ भी तुझपै निसार करते हैं!
तुमसे बस इतना प्यार करते हैं!

इश्क का इज़हार कैसे करें!
बात भी करने से तो डरते हैं!

जिस घड़ी तुझको पा लेंगे हम!
उसका हम इन्तज़ार करते हैं!

तुम ही सोचो भला जियें कैसे!
तुझ पे जो बार-बार मरते है!

ग़ज़ल

तुम जफ़ा जो करो तो वफ़ा हो गई!
हम महोब्बत करें तो खत्ता हो गई!

तुमने हमपै किए है हज़ारों सितम!
की शिकायत तो हमको सज़ा हो गई!

चाहते तुमको बस! चाहते ही रहे!
जितना चाहा तुम उतनी जुदा हो गई!

तुम ना जाओ अभी खुदा के लिए!
बात दिल की ज़ुबाँ से बयाँ हो गई!

ख़ामोशी है! तनहाई है!
छाई कैसी रुसवाई है!

ज़िंदा रहना भूल गए हैं!
मौत की ऐसी अँगड़ाई है!

तुम भी ज़रा साज़ उठाओ!
सन्नाटें की शहनाई है!

जीना तो है लाज़िम 'शाकिर'!
सज़ा ख़ुदा से जो पाई है!

नज़म

अपने अरमान को ज़िन्दा रखना!
अपनी पहचान को ज़िन्दा रखना!

कत्लोगारत शहर में हो रही है!
अपने ईमान को ज़िन्दा रखना!

दिल तो नादानी से ही कायम है!
ऐसे नादान को ज़िन्दा रखना!

भूल जाना बेशक किसी शख्स को तुम!
उसके अहसान को ज़िंदा रखना!

बाद में लड़ना तुम ज़मीनों पे!
पहले ईन्सान को ज़िन्दा रखना!

बेकरार हूँ मुझको करार आए ना!
अब तो जीने का कारोबार आए ना!

मिली बस रुसवाईयाँ हर शय मैं मुझे!
मेरे माज़ी को मुझपे प्यार आए ना!

आज फिर उनकी यादों का मौसम आया!
कितने मौसम गए मगर बहार आए ना!

अपनी मंज़िल तक पहुँचेगा क्या 'शाकिर'!
जिसे घर का भी राहगुज़ार आए ना!

अपना समझा जिसे क़ातिल निकला!
ऐ खुदा तू भी तो काफ़िर निकला!

जज़बये ईन्तकाम रग-रग में था लेकिन!
रहा खामोश तू भी तो शाकिर निकला!

शेखो रक़ीब बराहमिन क्या बुरे थे ये!
थू मुक़कदर पर तू भी शायिर निकला!

तुझे तो है खबर 'शाकिर' वो ना आएगा!
किसकी तलाश में किसके खातिर निकला!

आजकल मैं ये क्या करने लगा हूँ!
अपने ही अक्स से ड़रने लगा हूँ!

ग़म सहने की हुई है आदत मुझको!
बेवजा आह क्यों भरने लगा हूँ।

थक न जाँऊ कहीं चलते-चलते!
बारहा राह में रूकने लगा हूँ!

है खबर मुझको वो न आएगा!
किसलिए राह फिर तकने लगा हूँ!

दिल मत तोड़ो दिल मेरा
जो कहता है करने दो!
इन आँखों की मस्ती में
डूब के मुझको मरने दो!

आँखें नशीली होंठ गुलाबी
कर दे न मुझको ये शराबी!
तुम भी मुझको प्यार करो ना
जो होता है होने दो!

अबके आया वस्ल का मौसम
दूर हुए अब लगता है सब ग़म!
ना रोको तुम ना टोको तुम
जुल्फों की छाँव में सोने दो!

कभी चराग़ कभी रौशनी से ड़रते हैं!
हुआ है क्या हमें क्यों ज़िन्दगी से ड़रते हैं!

मज़ाक बनके रह जाएंगे जहाँ के लिए!
इसीलिए तो हम आशकी से ड़रते हैं!

अपनों ने छोड़ा है जबसे तन्हां हमको!
तबसे हम हर किसी अजनबी से ड़रते हैं!

खफ़ा न होना तुम हमसे खुदा के लिए!
तेरी कसम हम तेरी बेरूखी से डरते हैं!

ग़ज़ल

बनके दुश्मन जिसने दोस्ती निभाई है!
मुझसे मिलने वो आज भी तो आई है!

मुश्किलों में अकेला मुझे छोड़ा नहीं!
मेरे साथ कभी रिश्ता उसने तोड़ा नहीं!

उसने कोई ना कोई मुझपे अहसाँ किया!
खैर दुनिया ने जब भी मुझे रुसवा किया!

और उसमें अनोखी इक बात है यही!
मैं जहाँ जाऊँ वो मेरे साथ है वहीं!

इस विराने में मुझसे मिलने आई है!
एक मैं हूँ यहाँ और तनहाई है!

छलकी है फिर शराब
कुछ तो हुआ हुआ!
रुख से उठा नकाब
कुछ तो हुआ हुआ!

खामोश क्यों हो आज
हमसे खफ़ा हो क्यों!
देते नहीं जवाब
कुछ तो हुआ हुआ!

बैचेनी क्यों है आज
दिल में है दरद क्यों!
क्यों है हमें अज़ाब
कुछ तो हुआ हुआ!

आँखों में क्या नमी है
'शाकिर' घटा हो क्यों!
मौसम है कुछ खराब
कुछ तो हुआ हुआ!

तन्हा बीते ये ज़िन्दगी मेरी!
बन जाये ग़म हर खुशी मेरी!

मैंने दिल को बहुत था समझाया!
पर कहाँ दिल ने सुनी मेरी!

अश्क से इतना प्यार है मुझको!
खो गई अब तो हँसी मेरी!

अब किसी से नहीं गिला 'शाकिर'!
मौत अब ज़िन्दगी बनी मेरी!

ग़ैर भी मैंने अब दोस्त बना रखे है!
मैंने पलकों पे कई ख्वाब सजा रखे है!

रोना चाहा जब तो टपका न आँसू कोई!
मैंने पहले से ही जो अश्क बहा रखे है!

हो रही है मेरे बदन में क्यों कांटों की चुभन!
किसने मेरी कब्र पे फूल चढ़ा रखे है!

कभी वो हाल पूछने ना आ जाए 'शाकिर'!
इसलिए ज़ख्म ये दिल में दबा रखे हैं!

इस शहर में कोई मेरा अपना नहीं!
जैसे इन घरों में कोई इन्साँ नहीं!

रात दिन बैठा किये हम तन्हा-तन्हा!
फिर भी ये दिल तो मेरा तन्हा नहीं!

सोचता हूँ मैं जो सोचे न कोई!
इस शहर में तो कोई मुझसा नहीं!

रास्ता खुद अपना कैसे मैं बना लूँ!
आम सा इक शख्स हूँ मैं दरया नहीं!

दिया तुमने इतना ग़म!
उम्र मेरी करदी कम!

हो गया हूँ दिलजला!
फिर भी तेरा शुक्रिया!

बढ़ते है ना अब कदम!
बस यहीं रूकते है हम!

तुमने दी ये क्या सज़ा!
फिर भी तेरा शुक्रिया!

बस यही है इक सितम!
अब बचा थोड़ा सा दम!

हर सितम यूँ सह लिया!
फिर भी तेरा शुक्रिया!

खाई थी हमने कसम!
तोड़ दी तुमने सनम!

कितना तुमने ग़म दिया!
फिर भी तेरा शुक्रिया!

हो गई अब आँखे नम!
सह के तेरा हर सितम!

क्या दिया और क्या मिला!
फिर भी तेरा शुक्रिया!
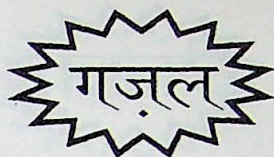
आज रंगो को जवाँ देखा है!
मैंने आज कहकशाँ देखा है!

जब की किसी से बात ज़ाहिर तो!
पूछता है मुझसे कि कहाँ देखा है!

छोटे बच्चों को न रुलाया करो!
मैंने तो इनमें खुदा देखा है!

कौन कहता है मैकदा घर जलाये!
मैंने तो इनमें भी धुआँ देखा है!

पूछो मत मुझसे मैंने है देखा क्या!
मैंने तुमसे ज़्यादा जहाँ देखा है!

लुत्फ बस ईश्क में है 'शाकिर'!
मैंने हर चीज़ का मज़ा देखा है!

ज़िन्दगी में क्या मकाम आया है!
मेरा कातिल ही मेरा साया है!

जब कभी लगा अन्धेरा सा!
मैंने अपना ही घर जलाया है!

काँपता हूँ मैं उसके आते ही!
उसने इतना मुझे सताया है!

काम वो करता है रकीबो सा!
मैंने अपना जिसे बनाया है!

बदले मौसम, बदला जहाँ!
हम वहीं हैं! हम थे जहाँ!

कोई ज़रा बताऐ हमको!
मंज़िल हमारी है कहाँ!

बिखर गया सब दूर-दूर तक!
कुछ यहाँ और कुछ वहाँ!

क्या बताऐ किसी को 'शाकिर'!
था ही क्या जो ना रहा!

कोई उजड़ी हुई कच्ची दीवार नहीं!
ये मेरा दिल है तेरे शहर का बाज़ार नहीं!

रहो खामोश तुम शायद यहीं होगा बेहतर!
मत कहो ये कि तुझे मुझसे कोई प्यार नहीं!

मैं बड़ी दूर से आया हूँ उम्मीदें लेकर!
कौन कहता है कि इस शहर में मेरा यार नहीं!

कैसे आसानी से भूल पायेगा तुझे 'शाकि़र'!
मेरा दिल फिर से बिकने को तैयार नहीं!
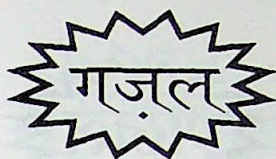
मेरे सब्र की इन्तहां ही नहीं!
मेरे खातिर ये जहाँ ही नहीं!

फिर भी मैं चलता गया हर दम!
और कभी भी मैं रुका ही नहीं!

लगती है क्यों घुटन सी मुझको!
मेरे कमरे में हवा ही नहीं!

जानलेवा इक मर्ज़ है मुझको!
जिसकी कोई भी दवा ही नहीं!

सोचता हूँ कि मर ही जाऊँ मैं!
अब जीने में कुछ मज़ा ही नहीं!

बिगाड़ेगा तेरा कोई क्या 'शाकिर'!
जबकि तू कभी बना ही नहीं!

तेरे इस प्यार के काबिल नहीं!
छोड़ दो मुझको मैं कातिल नहीं!

कहाँ से ज़िंदगी हसीं है मेरी!
तन्हा रहता हूँ मैं महफिल नहीं!

हकीकत है इश्क दिलवाले करते है!
रोकता हूँ तुझे बेशक मैं बुज़दिल नहीं!

दशते सहरा है ज़िंदगी 'शाकिर'!
छोड़ दे मुझे मैं तेरी मंज़िल नहीं!

पहलू में था समन्दर सबको हैराँ रखा!
बनके सहरा खुद को हमने प्यासा रखा!

ज़रा इस तिशनगी से कोई बचाए हमको!
खुदा ने क्यों हर वक्त हमें ऐसा रखा!

पहलू में हमको रखकर बारहाँ की खत्ता!
खुद को हर शक्स से तुमने तन्हां रखा!

दूर ना होंगे कभी 'शाकिर' कहा करते थे तुम!
खुद को फिर क्यों हमसे जुदा रखा!

ग़ज़ल

दीजिए अब हमे बद्‌दुआ दीजिए!
बस हमे उम्र भर की सज़ा दीजिए!

क्यों रुलाया है हर वक्त तुमने हमें!
यूँ रुलाके ज़रा अब हंसा दीजिए!

रहते हो मेरे दिल में है मुझको खबर!
अपने घर का ज़रा अब पता दीजिए!

अपनी मर्ज़ी से देखा है चेहरा तेरा!
अपनी मर्ज़ी से अब तो दिखा दीजिए!

ज़ख्म दिल में बहुत है जो तुमने दिये!
ज़ख्म भरदे हमारे दवा दीजिए!

चुरानी है नज़र हमसे फिर मिलाते क्यों हो!
जो हर बात छुपानी है तो बताते क्यों हो!

अश्क अनमोल है कहा करते थे तुम!
हकीकत है तो आँखों से गिराते क्यों हो!

शबोरोज़ आके तस्सवुर में चले जाते हो!
जाना ही है तो ख्यालो में आते क्यों हो!

दिल को अब न करार है ना अबके हमको होश है!
जबसे देखा है उनको तबसे हम खामोश हैं!

नज़रों में उनकी जादूगरी है! आँखों में है मैकशी!
जामें साकी में कब डूबे हैं अब तक हम मदहोश हैं!

देखा उन्होंने हो गये पागल!
तीर नज़र ने कर दिया घायल!
उनसे मोहब्बत करने लगे हैं!
अब क्या हमारा दोष है!

बढ़ने लगी है बेखुदी! थमने लगी है ज़िंदगी!
कोई सम्भाले हमको ज़रा कबसे हम बेहोश हैं!

मेरे मरने का इन्तज़ार करो!
इस तरह कुछ तो मुझे प्यार करो!

दिल हो बेचैन रूह को हो तड़प!
मुझको तुम इतना बेक़रार करो!

लोगों की बातों पर यकीन करो!
मुझपे थोड़ा सा ऐतबार करो!

अपनी नज़रों से न गिराओ मुझे!
मेरे खातिर तो इतना यार करो!

मेरे नगमें जो गाओगे
तो महोब्बत होगी!
मुझसे मिलने यूँ आओगे
तो महोब्बत होगी!
मिलने आते हो बहुत कम
जाते हो बहुत जल्दी!
इतना जल्दी जो जाओगे
तो महोब्बत होगी!
तुम भी वादों को भूलना
सीख लो हमसे!
वादों को तुम निभाओगे
तो महोब्बत होगी!
दोस्ती है अगर मुझसे
तो अच्छा है!
दुश्मनी गर निभाओगे
तो महोब्बत होगी!

उस शख्स से ये शख्स बनाने वालो!
मुझको कम मत समझना ज़माने वालो!

हूँ जो बेहोश मिली है खैरात तुमको!
तुम भी रोओगे मुझको रुलाने वालो!

अब तो तुमपे मुझको तरस सा आता है!
ग़म की आग में मुझको जलाने वालो!

अब तो मिटने से बचाओ तुम खुद को!
अपना बनकर मुझको मिटाने वालो!

ग़ज़ल

देखें हैं हर बात में जज़्बात के आँसू!
अब भी न भूल पाये हैं उस रात के आँसू!

हिज्र के वो आँसू तेरे साथ के आँसू!
अब भी याद है मुझको मुलाकात के आँसू!

इक चीज़ में मिली खैरात में इक चीज़!
खरीदा हुआ ग़म है और खैरात के आँसू!

अब कुछ बचा नहीं पर कुछ तो है 'शाकि़र'!
अब भी कभी गिरते हैं आदात के आँसू!

दुनियाँ भर के ग़म ने गर मुझे छुआ होता!
तेरे ग़म से ज़्यादा अब क्या बुरा होता!

बैठके साथ तेरे बिताए होते कुछ पल!
काश मेरी ज़िन्दगी में ये भी हुआ होता!

आँधियां ना आई होती शायद न होता यूँ!
मेरे दिल का चिराग़ कभी न बुझा होता!

गला घोंट देता अरमानो का तू 'शाकिर'!
तेरा ये अरमाँ यूँ जलके न धुआँ होता!

मेरे होंटो से हर इक बात तो दुआ निकले!
ऐ खुदा तेरे भेष में कोई इन्साँ निकले!

लब पै सागर की तलब है मुझे सदियों से!
साकी तेरे मैखाने में ये अरमाँ निकले!

देखकर मुझको उस शक्स को मुझ पै प्यार आये!
खुदाया मेरे खातिर ऐसी इक सज़ा निकले!

मेरा महबूब तो तारीफ का मोहताज नहीं!
देखकर उनको अच्छे-अच्छों की हवा निकले!

हम तो प्यासे थे! प्यासे रहेंगें उम्र भर 'शाकिर'!
चाहे अबके मेरे पहलू से दरिया निकले!
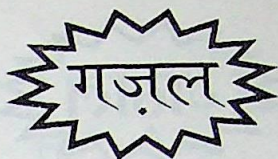
आइने से क्या तुम छुपाओगे!
सच है जो भी वहीं तो पाओगे!

कभी खुद से वफ़ा ना कर पाये!
मुझसे क्या दोस्ती निभाओगे!

मुझको अपनी तरह न समझो तुम!
आएगें जब भी तुम बुलाओगे!

आज लगता हूँ मैं तुम को नाहक!
कल मेरे नगमें गुनगुनाओगे!

हम तो है शायरी के कायल!
पर जब कुछ अच्छा तुम सुनाओगे!

कहीं छुप-छुप के हम रोयेंगे!
जब कभी दिल मेरा जलाओगे!

छोड देगा हर ऐब भी 'शाकि़र'!
जब मुझे अपना तुम बनाओगे!

बाद में तुम ही कहोगे!
मेरा ही अक्स था वो!
खुद पे बीतेगी तो कहोगे!
वाह! क्या शख्स था वो!

ज़िन्दगी ने गर ठुकराया मुझे!
मौत ने भी तो है चुराया मुझे!
हर कदम पे मिला मुझे सदमा!
हर किसी शख्स ने रुलाया मुझे!

ऐ खुदा तुझसे बस खुशी माँगी!
मैंने कब तुझसे ज़िन्दगी माँगी!
फैला है हर तरफ क्यों सन्नाटा!
तुने समझा कि खामोशी माँगी!

तुने ऐ हम-सफर कभी न समझा मुझको!
छोड़ा हर हाल में तुमने तन्हा मुझको!
तुझसे तो की थी मैंने कभी न ये उम्मीद!
जा तेरी भी नहीं कोई अब परवाह मुझको!

याद तुम भी करोगे!
क्या हसीं वक्त था वो!
खुद पे बीतेगी तो कहोगे!
वाह! क्या शख्स था वो!

अपनी मय्यत में जाने की आदत मुझे!
मरने का वो बहाना सुनाया गया!
ज़ख्म थे जो जिस्म पर वो आये नज़र!
दर्द दिल का वो मेरा भुलाया गया!

दुनियां-वालों से मैं तो नहीं हूँ खफ़ा!
ज़िकर तेरा किया और रुलाया गया!
तुझको देखा वहाँ पर तो ऐसा लगा!
मेरा ही वो जनाज़ा दिखाया गया!

रास्ते बदल गये!
फ़ासले बदल गये!
अब तो जीने के भी
मायने बदल गये!

ये सच है कि हमने
ठोकरें खाईं हैं कई!
मगर अब तो दिलों के भी
होसले बदल गए!

ঔ৯ঔ৯

ग़म को पीने नहीं देता!
ज़ख्म सीने नहीं देता!
ये तो बेदर्द जमाना!
मुझको जीने नहीं देता!

सहमी-सहमी सी फिज़ाएँ!
हर तरफ खुशक हवाएँ!
साँस लेना भी मैं चाहूँ!
साँस लेने नहीं देता!

ঔ৯ঔ৯

अब चाहा है रब से मैंने सिर्फ तुमको!
प्यार किया है अब से मैंने सिर्फ तुमको!
अब तो दिल थाम के बैठा है 'शाकिर'!
देखा है जब से मैंने सिर्फ तुमको!

ঔ৯ঔ৯

जी तो करता है इन आँखों में
बसा लूँ तुझको!
इस दुनियाँ की निगाहों से
बचा लूँ तुझको!
इस से पहले कि चुरा ले कोई तुझको तुझसे!
यक लक्त में अपना बना लूँ तुझको!

ঔ৪ঔ৪

ग़म का पैमाना आँखों से छलकने लगा!
ज़हनों दिल मेरा आज फिर बहकने लगा!
होंटो की सिलवट माथे की शिकन खो गई!
जब तेरा नूर तस्सवुर में महकने लगा!

ঔ৪ঔ৪

कितनी ही किस्तों में है ये ज़िन्दगानी!
कुछ तेरी कहानी कुछ मेरी कहानी!

ঔ৪ঔ৪

कभी खुशी है कभी है ग़म!
दुनिया यहीं है कहते हैं हम!
कभी है ज़्यादा कभी है कम!
तब तक होंगे जब तक है दम!

ঔ৪ঔ৪

तेरे कूचे से चले हैं तेरे ही कूचे तक!
बस इतना ही है ज़िन्दगी का फासला मेरा!
छीन लूँगा ग़म तेरा दे दूँगा खुशी अपनी!
बहुत सोचा मगर यही है फैसला मेरा!

तेरे खात़िर मैं लड़ लूँगा जहाँ से भी!
तेरे खात़िर मैं लड़ लूँगा खुदा से भी!
शायद ही काबिले तारीफ है हौसला मेरा!

ଓଃଓଃ

ज़िन्दगी है इक सितम
जी न करता कि जिये हम!
फिर भी जीना पड़ता है
भुला के सारे दर्दो ग़म!
मुश्किलें कुछ और आती
मंज़िलें कुछ दूर दिखती!
फिर भी बढ़ते हैं कदम
भुला के सारे दर्दो ग़म!

ଓଃଓଃ

शब आते ही वो याद आती है मुझको!
और फिर वो तड़पाती है मुझको!
कुछ वो समझती है मेरी बात!
और कुछ वो समझाती है मुझको!

तेरा प्यार दवा से दर्द बन चुका है!
तड़पाता है मुझको इतना बेदरद बन चुका है!

ख्वाब देखा न करो!
ख्वाब टूट जाते हैं!
वो यार की क्या!
जो यार रूठ जाते हैं!

उनके इश्क में सनम रखा क्या है!
उनसे प्यार करने की सज़ा क्या है!
उनकी किस अदा पे फिदा हो 'शाकिर' तुम!
उन पै मर मिटने की आखिर वजह क्या है!

अपना ग़म किसी को बता नहीं सकता!
क्या छुपा है दिल में दिखा नहीं सकता!
खायी चोट दिल पे ताज़ा है 'शाकिर'!
दरदे दिल मैं अभी बुला नहीं सकता!

ख्वाब में आने का वादा जो किया!
नींद का इन्तज़ार करते हैं!
वस्ल को हो गई है अब मुद्दत!
दीद़ का इन्तज़ार करते हैं!
मेरी किस्मत में हार है फिर भी!
जीत का इन्तज़ार करते हैं!
इस बहाने सही गले तो मिले!
ईद़ का इन्तज़ार करते हैं!

कैसा ज़िन्दगी में ये निखार आ गया!
तुमने प्यार से देखा तुमपे प्यार आ गया!
कलियाँ खिल रही हैं क्या बहार आ गया!
मेरे दिल बैचेन को अब करार आ गया!

आपके ईश्क में हुए हैं बरबाद हम!
फिर भी आप से ही महोब्बत करते हैं!

ଔଓଔଓ

हर इक बात को मेरी दिल्लगी कहा गया!
दरद जो निकला दिल से शायरी कहा गया!

ଔଓଔଓ

हमें इश्क में वो तो ड़राने लगे हैं!
चाहते हैं कितना हम को बताने लगे हैं!
हद से कुछ ज़्यादा अब तो सताने लगे हैं!
गैरों के साथ चलके जलाने लगे हैं!

ଔଓଔଓ

दिल में है जो बात
निगाहों से कीजिए!
खन्जर ना हो तो कत्ल
अदाओं से कीजिए!

ଔଓଔଓ

होते हैं मैहफिलों में अक्सर
मगर तन्हा हूँ!
आपने दम तो निकाला है
फिर भी ज़िन्दा हूँ!

ॐॐ

क्या ज़मीं है! और ये आसमां क्या है!
समझा है फक्क़त ईंनसा ये खुदा क्या है!
मरनेवालों को ज़िन्दगी! जीनेवालों को मौत क्यों!
मेरी इस बेखुदी की आखिर दवा क्या है!

ॐॐ

आज उनसे हम मिले हैं!
मुददतों के बाद!
अब कहीं जा के हैं सम्भलें
हादसों के बाद!

ॐॐ

खुद से शिकवा! खुद से शिकायत!
दिल में अक्सर होती है!
अश्क बहाकर तन्हा-तन्हा!
आँखें पत्थर होती है!

इस शहर में अक्लवालों की बहुत पेहचान है!
जानते तो हैं सभी को खुद से ही अंजान हैं!

दश्ते सहरा सी ज़िंदगी क्यों है!
अपनी होकर भी अजनबी क्यों है!

ज़िंदगी के मैकदे में लड़खड़ाकर गिर गये!
गीत तो गा ना सके बस गुनगुनाकर गिर गये!

चलते-चलते क्यों रूक से गए हैं हम!
ज़िन्दगी के सफर में थक से गए हैं हम!

मेरी ज़िन्दगी में रोने की जगह रखना!
मेरे खातिर ऐसी इक वजह रखना!

दिल की बात जुबाँ पर ला नहीं सकता!
क्या छुपा है इसमें बता नहीं सकता!

यहाँ किसको है फुर्सत
सर उठाने की!
यही तो खासियत है
इस जमाने की!

देख के हमें सीखा जिन्होंने
कि चलना है कैसे!
वही आज हमको सिखाते हैं
कि जीना है कैसे!
हमें मालूम है कि राहगुज़र
कठिन है मगर!
हम खूब जानते हैं
कि सम्भलना है कैसे!

वैसे तो बात करने के लिए
जुबाँ होती है!
मगर दिल की बात आँखों से
बयाँ होती है!

ॐॐ

तुमसे दिल लगाने को
मजबूर किया तुमने!
सज़ा पाई हमने और
कसूर किया तुमने!

ॐॐ

जबकि किसी को मुझसे
महोब्बत नहीं!
मुझे भी किसी की
ज़रूरत नहीं!

ॐॐ

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं!
जो गिरकर सम्भल जाते हैं!
और फिर एक शख्स से दूसरे
शख्स में बदल जाते हैं!

ॐॐ

ऐसे हालात है अबके मेरे!
जीने की बात न करो मुझसे!
हुआ है अरसा छोड़े हुए शराब!
पीने की बात न करो मुझसे!

मुझे दीवाना इस कद़र बना दिया है तुमने!
खुदा क्या! खुद को भी भूल चुका हूँ मैं!

फैला है आसमां में ये धुआँ कैसा!
मेरे दिल में इतनी तो न लगी है आग!

मुझसे दामन न छुड़ाना
खुदा के लिए!
मर जाऊँगा वरना मैं
जहाँ के लिए!

सब कुछ था मगर अब कुछ भी नहीं!
मेरी दीवानगी का सब्ब कुछ भी नहीं!

जिसको चाहूँ
खो जाता है!
ऐसा क्यों
हो जाता है!

ꕥꕥ

हसरतें अपना बनाने की मिटा दूँ कैसे!
आग फिर से भड़क जाएगी बुझा दूँ कैसे!

ꕥꕥ

जैसे-जैसे ज़िन्दगी गुज़ारता चला गया!
ज़िन्दगी में सब कुछ हारता चला गया!

ꕥꕥ

आज उनसे हम मिले हैं कुछ इस तरह!
हम तो थे वहीं पर वो न थे वहाँ!

ꕥꕥ

बोझ वो ज़िन्दगी का यूँ उठाये बैठे हैं!
शेखजी मैकदे में मुहँ फूलाये बैठे हैं!

ꕥꕥ

क्या रखा है मेरे पास
तुझको मैं क्या दूँगा!
बस अपने तसव्वुर का रोशन
कैहकशाँ दूँगा!

ಌ೩ಌ೩

होश में हूँ मैं
फिर बेखुदी क्यों है!
अश्क तो पी चुका
तिशनगी क्यों है!

ಌ೩ಌ೩

कौन कहता है कि मौत से कम है जीस्त!
इक बार जीने के लिए सौ बार मरना पड़ता है!

ಌ೩ಌ೩

ऐ खुदा मुझे कुछ दुआ तो दे!
अपने ज़िन्दा होने की सदा तो दे!

ಌ೩ಌ೩

पहली नज़र में देखा तुझे
दिल में तेरी तस्वीर बन गई!
मैं तेरी मंज़िल हूँ शायद
मगर तू मेरी तक़दीर बन गई!
छोड़ दूँगा दुनियां सारी
पर तुझे न छोड़ पाऊँगा!
मैं रान्झा बना हीर का
तुम मेरी हीर बन गई!

इस ग़म को हम दिल से लगाये बैठे हैं!
कहाँ है वो जिन्हें दिल में छुपाये बैठे हैं!

कौन कहता है मेरी ज़िन्दगी में कोई ग़म नहीं!
तू जो नहीं है मेरे पास क्या ये कम नहीं?

कल तक जो भी था वो सब आज नहीं!
मेरी धड़कनो को दिल का लिहाज़ नहीं!

कैसे दे हम बददुआ इस ज़माने को भला!
इस ज़माने में कम्बख्त वो भी तो शामिल है!

उस वक्त भी मैं था!
इस वक्त भी मैं हूँ!
वो शख्स भी मैं था!
ये शख्स भी मैं हूँ!
पसे आईना हूँ मैं!
सरे आईना है क्या!
ये अक्स भी है मेरा!
ये अक्स भी मैं हूँ!

इतनी भी ज़िन्दगी खफ़ा न हुई थी कभी!
कि कभी हम खुद पे कभी ज़िन्दगी पे रोते हैं!

हम से मिलने की आपने क्यों ज़हमत उठाई!
बस हमारे बारे में सोचा इतना ही काफी था!

मैंने तुझसा हसीं नहीं देखा!
देखा जो यहाँ कहीं नहीं देखा!

कल तक जो भी था वो सब आज नहीं!
मेरी धड़कनो को दिल का लिहाज़ नहीं!

हम अगर मोहब्बत की खत्ता करते हैं!
तुम ही सोचो भला हम क्या बुरा करते हैं!
देखतें हैं तुम्हें शामोसहर हर पल हम!
अपने दर्दे दिल की हम तो दवा करते हैं!

आपको खत जो लिखा
तो पता भूल गया!
आपसे जब भी मिला
तो वजह भूल गया!
आपको देखा है हमने
मंदिरों में अक्सर!
आपको देखा जब भी
तो खुदा भूल गया!

प्यार करके भूल जाना
अब ज़रा मुश्किल सा है!
दिल के ज़ख्मों को छुपाना
अब ज़रा मुश्किल सा है!

तेरे दीदार को जब तरस जाते हैं!
हम खुद पै तब यूँही बरस जाते हैं!
हर तरफ लगती है कुछ आग की तपिश!
हिज्र की लोअ में यूँही झुलस जाते हैं!

मेरी ज़िन्दगी में गमों का समन्दर है!
छोड़ दो मुझको यहीं पर यही बेहतर है!

मिला ग़म नहीं जब बस यूँही रो लिया!
उन्हें पाने की खवायिश में खुद को ही खो दिया!

तुम न चाहोगे मगर हम तो तुम्हें चाहेंगे!
ज़िन्दगी यूँही कटेगी! यूँही मर जाएँगे!

ज़माने के ऊपर हूँ मैं
ज़माना नीचे है मेरे!
आप मुझको सिखाते हैं
ज़माना पीछे है मेरे!

याद करना हमें! याद करना हमें!
प्यार हमसे नहीं! ये ना कहना हमें!
याद करना हमें! याद करना हमें!
छोड़ दूँगा ये दुनिया है तेरी कसम!
तेरे बिन ईक भी दिन अब ना रहना हमें!
याद करना हमें! याद करना हमें!
तेरे ख़ातिर तो सह लेंगे हम हर सितम!
दूर होना तेरा! है न सहना हमें!

शोर की खामोशी में गुमनाम सा शख्स!
लोगों की भीड़ में इक आम सा शख्स!
अपनी तो हसरतें न कर सका पूरी!
देखये आप भी इक नाकाम सा शख्स!
खामियाँ ये न छुपा पाया अपनी!
अपने ही नाम से बदनाम सा शख्स!

ఆಣఆಣ

गर कुछ लोग अपने आप को इन्साँ कहते हैं!
फिर हम भी अपने आप को खुदा कहते हैं!
उनकी पलकें झुक जाती है हमको देखकर!
शायद इसी अदा को हम हया कहते हैं!
उम्र लगती है जिसको असर होने तक!
सुना है इसी चीज़ तो दुआ कहते हैं!

देशभक्ति गीत

ऐ मेरे वतन! ऐ मेरे वतन!
तुझपे कुरबा मेरी जाँ मेरा तन!
ऐ मेरे वतन! ऐ मेरे वतन!
तेरे आँचल में पलके बड़े है हुए!
लेके तेरा सहारा खड़े है हुए!
बाँध लेंगे कफन हम तो तेरे लिए!
चाहै बुझ जाए सबके घरों के दिए!
तू शान मेरी! तू जान मेरी!
मेरे दिल की है तू धड़कन!
ऐ मेरे वतन! ऐ मेरे वतन!
तेरे कदमो को चूमेगा सारा जहाँ!
पूजे तुझको ये धरती और आसमाँ!
तेरी मिट्टी में कैसी बसी है महक!
नाम में है तेरे तारों सी चमक!
ऐ मेरे चमन! मेरे गुलशन!
अनमोल है तू! तेरा कण-कण!
ऐ मेरे वतन! ऐ मेरे वतन!

जिस वतन में सुभाष जन्मे!
उस वतन के वीर हम!
तोड़ जो पाए न दुश्मन!
ऐसी है ज़नजीर हम!
मर मिटेंगे इस जमीं पर!
खाई है हमने कसम!
जब मिटाये मिट न पाए!
ऐसी है तस्वीर हम!
खून से लिखेंगे अब तो!
अपना हर इतिहास हम!
अब लड़े दुश्मन से बनकर!
लक्ष्मण की लकीर हम!
है वतन हमको ये प्यारा!
छोड़ेंगे न हम कभी!
ये वतन हम से ही है!
इसकी तो है तकदीर हम!

हम फूल है इसके!

गुलशन है ये हमारा!

सींचा जिसे खून से!

चमन है ये हमारा!

सबसे ऊँचा रहे!

हिन्दोस्ता हमारा!

सबको जाँ से प्यारा!

वतन है ये हमारा!

दूर नगर से आया कबूतर!

लेकर ये सन्देश!

अपने देश में प्रेम बढ़ाओ!

है मेरा उद्‌देश!

भारतवर्ष का इस दुनिया में

ऊँचा नाम करो!

अपने देश का सर ऊँचा हो!

ऐसा काम करो!

अपने देश के दुख संकट!

तुम दूर करो मिलकर!

अपने चमन को तुम महकाओ!
बच्चो तुम खिलकर!
इस देश के सैनिको!
यह देश तुम्हारा है!
इस देश से जो टकराया है!
वह तुमसे हारा है!
भारतवर्ष के नौजवानो!
करो तुम प्रयास!
इस देश में जो भी प्यासा है!
मिटा दो उसकी प्यास!
दूर नगर से आया कबूतर!
लेकर ये सन्देश!
अपने देश में प्रेम बढ़ाओ!
है मेरा उद्देश!
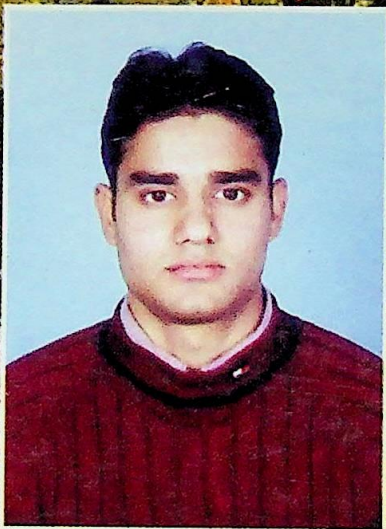
Name : AMIT KOUL "SHAKIR"
Father's name : SH. J. K. KOUL "BEZAAN"
Date of Birth : 13th of February, 1984
Student of Engg. (Mech.)
Dr. J. J. Magdum College
of Engineering, Jaysingpur,
Distt. Kolhapur, Maharashtra
Ph.: 02322-221606,02322-221497

Available at: H. No. 63, Sector A/1, Laxmipuram,
Chinore, Bantalab, Jammu, Ph. No.: 2596142

Printed By :
DURGA PRINTING PRESS
Old Janipur, Jammu, Ph.: 2539863, 2533456